विचार बिन्दु

सबसे उत्तम विजय प्रेम की है। जो सदैव के लिए विजेताओं का हृदय बाँध लेती है। –सम्राट अशोक

प्राकृतिक जलवायु समाधान पर एक बड़ी यात्रा की छोटी कहानी

भारत में मेरे छोटे से गाँव में मैंने अनियमित वर्षा के कारण किसानों की फसल चौपट होते देखा है। वहां प्राकृतिक जलवायु समाधान के अनुसार समीपवर्ती नरो पहाड़ के वनों को पुनर्स्थापित करना, वर्षा जल के संचय हेतु ताल–तलाइयाँ बनाना और हरी–खाद और गोबर की खाद के प्रयोग से उल्लेखनीय परिवर्तन मिला। इन प्रयासों से हमारे सूखे कुओं में पानी की उपलब्धता में सुधार हुआ। भरी सूखे के दौरान थोड़ी सी सिंचाई से मदद मिली। खेतों में मृदा–कार्बन की बढ़त भी हुई है। इन सबके फलस्वरूप कृषि उपज बेहतर हुई और आजीविका में सुधार हुआ। यह किस्सा उन अनेक विधियों में से एक ऐसा उदाहरण देती है जहाँ प्राकृतिक जलवायु समाधान द्वारा पारिस्थितिक तंत्र, अर्थव्यवस्था और समुदायों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

आइए एक और उदाहरण देखें। भारत के उस हृदय में जहाँ अतीत की सभ्यताओं की कहानियाँ लिए गंगा बहती है और हिमालय समय के प्रहरी के रूप में खड़ा है, एक क्रांति घटित हो रही है। यह उद्योग या प्रौद्योगिकी से नहीं, बल्कि पत्तियों की हल्की सरसराहट, घास के मैदानों की फुसफुसाहट और आर्द्रभूमि की शांति में देखी जा सकती है। प्राकृतिक जलवायु समाधान की यह एक और कहानी है। यह प्राचीन ज्ञान की कहानी है जिसे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत पुन: खोज करउपयोग कर रहा है। मैं इस यात्रा का हिस्सा बनकर बहुत प्रसन्न हूं।

प्राकृतिक जलवायु समाधान वस्तुत: वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड कम करने के प्राकृतिक प्रयास हैं जिनमें वनों, घास के मैदानों और आर्द्रभूमि जैसे प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र के सतत प्रबंध और पुनर्स्थापन शामिल हैं। इसमें जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन भी शामिल हैं। यह जलवायु संकट से निपटने के लिए मूल रूप से प्रकृति के विरुद्ध काम करने के बजाय उसके साथ काम करने के सन्दर्भ में है। लेकिन ये समाधान हम सभी के लिए क्यों अहमियत रखते हैं? इसका उत्तर न केवल जलवायु परिवर्तन को कम करने की इन उपायों की क्षमता में है, बल्कि प्राकृतिक जलवायु समाधान से जैव–विविधता, जल–सुरक्षा और आजीविका पर गहरा धनात्मक प्रभाव होता है। दरअसल, प्राकृतिक जलवायु समाधान वैश्विक कार्बन उत्सर्जन की 30 प्रतिशत से अधिक समस्या का उत्तर है।

हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों से लेकर हरे–भरे पश्चिमी घाट और विशाल थार रेगिस्तान तक भारत अपने विविध पारिस्थितिकी तंत्रों में प्राकृतिक जलवायु समाधान को लागू करने के लिए भू–परिदृश्यों का एक अनूठा संयोजन प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए देश में वृक्षों की 3708 से अधिक प्रजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक कार्बन चक्र में भूमिका निभाती है। पर अभी तक इन प्राकृतिक क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं हो रहा है, हालाँकि अब स्थिति बदल रही है।

एक उदाहरण के रूप में सुंदर बन पर विचार करें, जो भारत और बांग्लादेश में फैला दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है। पृथ्वी पर मैंग्रोव सबसे प्रभावी कार्बन सिंक में से एक हैं। नेचर क्लाइमेट चेंज जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में बताया गया है कि मैंग्रोव उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों की तुलना में प्रति इकाई क्षेत्र में चार गुना अधिक कार्बन एकत्र कर सकते हैं। ऐसे ही अन्य मैंग्रोव भारत की जलवायु रणनीति में एक प्रमुख भूमिका अदा कर सकते हैं, जो भारी मात्रा में कार्बन को संचित करने के साथ ही समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों में लाखों लोगों को चक्रवाती तबाही से भी बचा सकते हैं।

हमें यह भी समझना होगा कि प्राकृतिक जलवायु समाधान केवल बड़ी परियोजनाओं के बारे में नहीं हैं। हर छोटा–बड़ा क्रियान्वयन मायने रखता है। राजस्थान के शुष्क परिदृश्य में खेतों पर पेड़ उगाने की प्राचीन प्रथा से सीखते हुए लोगों के स्थानीय नेतृत्व वाले प्रयासों से बिगड़े खेतों को कृषि वानिकी के माध्यम से सुधार जा रहा है। यह पहल न केवल कार्बन को सोखती है बल्कि खाद्य–सुरक्षा को भी बढ़ाती है और ग्रामीण समुदायों को स्थायी आजीविका प्रदान करती है। विश्व संसाधन संस्थान की एक रिपोर्ट के अनुसार, पुनर्स्थापन और सतत वन प्रबंध में निवेश किए गए प्रत्येक डॉलर से 30 डॉलर तक का आर्थिक लाभ हो सकता है। ये लाभ बेहतर जल–भरण, बाढ़ सुरक्षा, मिट्टी की बेहतर उर्वरता और कार्बन पृथक्करण के वैश्विक मूल्य के रूप में आते हैं। हालाँकि,यह सफलता स्थानीय समुदायों की भागीदारी और समर्थन पर निर्भर करती है, क्योंकि वे जलवायु परिवर्तन का खामियाजा भुगतने की अगली कतार में होते हैं।

> **एक उदाहरण के रूप में सुंदर बन पर विचार करें, जो भारत और बांग्लादेश में फैला दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है। पृथ्वी पर मैंग्रोव सबसे प्रभावी कार्बन सिंक में से एक हैं। नेचर क्लाइमेट चेंज जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में बताया गया है कि मैंग्रोव उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों की तुलना में प्रति इकाई क्षेत्र में चार गुना अधिक कार्बन एकत्र कर सकते हैं।**

भारत 2030 तक 2.5 से 3 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर कार्बन की मात्रा को संचित करने के अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। इसमें प्राकृतिक जलवायु समाधान की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत सरकार की प्रतिबद्धता, जो राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति और प्रतिपूरक वनरोपण निधि अधिनियम जैसी नीतियों में परिलक्षित होती है, सही दिशा में बड़े कदम हैं। तथापि, प्राकृतिक जलवायु समाधान को पूरी क्षमता से नवाचारी बढ़ावा देने और सभी क्षेत्रों में साझेदारी की आवश्यकता है। यदि हम सही समय और सही तरीके से क्रियान्वयन करते हैं, तो प्राकृतिक जलवायु समाधान प्रकृति और मानव को विनाश से बचा सकते हैं। हरित और जलवायु–लचीले भविष्य के लिए प्राकृतिक जलवायु समाधान वस्तुत: वैज्ञानिक, अनुभवजन्य और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है। हम जलवायु परिवर्तन, जैव–विविधता संरक्षण और आजीविका से संबंधित संकट के चौराहे पर खड़े हैं। प्राकृतिक जलवायु समाधानों की प्रारंभिक सफलता हमें याद दिलाती है कि प्रकृति में हम अपने सबसे शक्तिशाली समाधान पा सकते हैं। और, हम अपने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर विश्व की रचना कर सकते हैं।

प्राकृतिक जलवायु समाधान पर हमारे स्टेट राउंड टेबल्स के बाद सामने आने वाली नवीन पहलों की चर्चा यहाँ रोचक होती है। हमने हाल ही में गुजरात में एक ज्ञान और प्रशिक्षण राउंड टेबल का आयोजन किया था। प्राकृतिक जलवायु समाधान के बहुमुखी लाभों पर चर्चा हुई जिसमें न केवल कार्बन पृथक्करण बल्कि जैव–विविधता, जल–सुरक्षा, मैंग्रोव पुनर्स्थापन, प्राणी–विहीन वनों का पुनर्वन्यकरण और लोगों की आजीविका में सुधार पर भी गहन मंथन हुआ। सभी का यह मत था कि यह कार्य स्थानीय पर्यावरण और सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ भारत के जलवायु लक्ष्यों में सीधे योगदान दे सकता है। गुजरात ने हाल ही में मैंग्रोव पुनर्स्थापन के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन के साथ 266 मिलियन अमेरिकी डॉलर के समझौता–ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है।

दूसरा उदाहरण हरियाणा से आया है। पंचकुला में में हुई राउंड टेबल के दौरान विचार–मंथन से मिली प्रेरणा के बाद हरियाणा सरकार ने नागरिकों की भागीदारी के साथ गैर–वन भूमि पर वृक्षारोपण का एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम लागू किया है। इसे वन–मित्र योजना कहा गया है और यह रोपे गए पौधों की उत्तरजीविता और वृद्धि से के अनुरूप लोगों को एक सुनिश्चित प्रोत्साहन राशि प्रदान करती है।

प्राकृतिक जलवायु समाधानों का उपयोग करने के भारत के प्रयासों के समर्थन में एक ऐसी परिवर्तनकारी पहल भी निहित है, जिसमें अभी तक 9 राज्यों के 900 से अधिक वरिष्ठ वन अधिकारियों को प्राकृतिक जलवायु समाधानके सिद्धांतों और क्रियान्वयन में प्रशिक्षित किया गया है। सितंबर 2024 तक हम 16 राज्यों और 12 से अधिक वैज्ञानिक संस्थानों तक पहुंचने की उम्मीद रखते हैं। इस महत्वपूर्ण प्रयास का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वानिकी और सम्बद्धि क्रियान्वयनों के माध्यम से भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) को सफल बनाने में ज्ञान के माध्यम से महत्वपूर्ण सहायता करना है। दुनिया के अग्रणी संरक्षण और वैज्ञानिक संगठनों में से एक, द नेचर कंजरवेंसी द्वारा समर्थित और टेरी स्कूल ऑफ एडवांस्ड स्टडीज द्वारा आयोजित यह पहल भारत में प्राकृतिक जलवायु समाधानों पर ज्ञान और प्रशिक्षण के क्षेत्र में अब तक की सबसे बड़ी पहल है। यह देखते हुए कि वन विभाग देश में 80 मिलियन हेक्टेयर भूमि से अधिक पर नियंत्रण रखता है, इस प्रशिक्षण का संभावित प्रभाव बहुत अधिक है। यह इस बात का एक ज्वलंत उदाहरण है कि क्षमता निर्माण कैसे पर्यावरणीय प्रबंधन के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है। यह कार्यक्रम यह भी दर्शाता है कि स्थायी भविष्य का मार्ग ज्ञान, सहयोग और प्रकृति की क्षमताओं के प्रति गहरे सम्मान से प्रशस्त होता है।

यहाँ एक बात और समीचीन है। मेरी 45 देशों की यात्रा ने मुझे दुनिया का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है, फिर भी भारत के विविध राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में जाकर प्राकृतिक जलवायु समाधानों को बढ़ावा देना मेरे लिए बहुत संतोष और सम्मान की बात है। भारत भर में यह यात्रा प्राकृतिक जलवायु समाधान के अनेक कार्यों के गहन अध्ययन का एक अवसर भी रही है। वनों, घास के मैदानों, आर्द्रभूमियों, मैंग्रोव, राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव अभयारण्यों, देववनों और कृषि पारिस्थितिकी प्रणालियों का पुनर्स्थापन, संरक्षण और प्रबंधन आदि का अध्ययन और विचार–मंथन और उस जानकारी को सबके साथ साझा करना मेरे लिए बहुत संतुष्टिदायक रहा है। इस व्यापक अन्वेषण ने न केवल मेरी पारिस्थितिक समझ को गहरा किया है बल्कि सतत विकास पर अनमोल अंतर्दृष्टि भी प्रदान किया है।

अत्याधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों को व्यावहारिक अनुभवों से प्राप्त जानकारी और स्थानीय परंपराओं में निहित गहरी समझ को साथ जोड़कर, एक एकीकृत रणनीति विविध भारतीय परिदृश्यों में प्राकृतिक जलवायु समाधानों का कार्यान्वयन कराना बहुत उपयोगी रहा है। ज्ञान का यह एकीकरण न केवल संरक्षण प्रयासों की प्रभावशीलता को बढ़ाता है बल्कि स्थानीय समुदायों के बीच स्वामित्व और भागीदारी की भावना को भी बढ़ावा देता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि प्राकृतिक जलवायु समाधानों से जुड़े कार्य सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हैं, और उन क्षेत्रों की सामाजिक–आर्थिक वास्तविकताओं के साथ मेल खाते हैं।

यह बहुत संतुष्टि की बात है कि इन प्रयासों ने हमारी प्राकृतिक विरासत तथा समाज के मध्य सामंजस्य को बेहतर करने की दिशा में समुचित ज्ञान व् अनुभव का योगदान दिया है। ऐसे प्रयास यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि प्राकृतिक जलवायु समाधान केवल सैद्धांतिक अवधारणा बनकर न रह जाए बल्कि पृथ्वी पर सतत विकास हेतु किये जा रहे हर प्रयत्न के ताने–बाने में सक्रिय रूप से पिरोया जा सके। यात्रा चल रही है। अनवरत चलती रहेगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

नाबालिग बेटी को दस्तयाब करने की मांग, जहर लेकर धरने पर बैठी दिव्यांग मां

महिला ने पुलिस पर नाबालिग को आरोपी के घर से दस्तयाब नहीं करने का आरोप लगाते हुए जहर पीने की चेतावनी दी

- **थानाधिकारी के निर्देश पर दो महिला कांस्टेबलों ने दिव्यांग महिला के हाथ से जहर की बोतल लेने का प्रयास किया**
- **खींचातानी में दिव्यांग महिला ने बोतल का ढक्कन खोलकर जहर पीने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस ने हाथ से बोतल छीन ली**
- **महिला से पुनः समझाईश करने एवं कार्यवाही का आश्वासन देने पर महिला राजी हुई तथा धरना समाप्त किया**

सायला, (निसं)। नाबालिग बेटी को आरोपी के घर से दस्तयाब नहीं करने से आहत मां शनिवार को सायला पुलिस थाना के आगे जहर की बोतल लेकर करीब चार घंटे तक धरने पर बैठी रही। महिला ने पुलिस पर नाबालिग को दस्तयाब नहीं करने का आरोप लगाते हुए जहर पीने की चेतावनी दी। वहीं थानाधिकारी रामेश्वर भाटी ने महिला से समझाईश करने का प्रयास किया।

इसे दौरान थानाधिकारी ने महिला से उसके हाथ में पकड़ी बोतल के बारे में पूछने पर उसने बताया कि उसकी नाबालिग बेटी को आरोपी के घर से दस्तयाब करने की मांग को लेकर धरने पर बैठी है। अगर पुलिस कार्यवाही नहीं करती है तथा उसको जबरदस्ती धरने से उठाने का प्रयास करेंगी तो वह जहर पी लेगी।

जिस पर थानाधिकारी रामेश्वर भाटी के निर्देश पर दो महिला कांस्टेबलों ने दिव्यांग महिला के हाथ से जहर की बोतल लेने का प्रयास किया। खींचातानी में दिव्यांग महिला ने बोतल का ढक्कन खोलकर जहर पीने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस ने समय रहते उसके हाथ से बोतल छीन ली। इसके बाद करीब साढे चार बजे महिला से पुनः समझाईश करने एवं कार्यवाही का आश्वासन देने पर महिला राजी हुई तथा धरना समाप्त किया।

जानकारी के अनुसार नाबालिग लड़की को इरादतन बालिग बनाने के लिए मिथ्या एवं कूटरचित दस्तावेज बनाकर शादी करने के मामले में आरोपी प्रवीण जैन की गत 12 फरवरी को गिरफ्तारी हो चुकी है। जिसकी जमानत भी न्यायालय जालोर द्वारा खारिज की जा चुकी है। लेकिन आरोपी प्रवीण की गिरफ्तारी के 19 दिन बाद भी पुलिस ने नाबालिग को दस्तयाब नहीं किया है। ऐसे में नाबालिग की दिव्यांग मां ने बेटी को आरोपी के घर से दस्तयाब कर सुपुर्द करवाने अथवा सक्षम न्यायालय के समक्ष पेश करने के लिए जिला पुलिस अधीक्षक जालोर से गुहार लगा चुकी है।

यह है मामला:– नाबालिग की मां ने जिला पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र पेशकर बताया कि उसकी नाबालिग बेटी को आरोपी प्रवीण कुमार पुत्र दुधमल जैन निवासी मेंगलवा मुम्बई से बहला फुसलाकर भगाकर ले आया था। जिसने नाबालिग को इरादतन बालिग बनाने के लिए मिथ्या एवं कूटरचित दस्तावेज बना दिए।

जिसका मुकदमा पुलिस थाना सायला में गत 12 जनवरी को दर्ज करवाया था। पुलिस ने मामले की जांच की तो सामने आया कि आरोपी प्रवीण जैन ने फर्जी तरीके से दस्तावेज बनाए थे। जिस पर पुलिस द्वारा आरोपी प्रवीण जैन को 12 फरवरी को गिरफ्तार कर न्यायालय जालोर में पेश किया गया। जहां से उसे पुलिस रिमांड पर सौंपा गया था। आरोपी को पुनः न्यायालय जालोर में पेश करने पर जेल भेज दिया गया। लेकिन आरोपी की गिरफ्तारी के 18 दिन बाद भी पुलिस ने नाबालिग लड़की को आरोपी के घर दस्तयाब नहीं किया है।

नाबालिग की मां का कहना है कि मेरी बेटी नाबालिग होने के कारण अच्छा बुरा सोचने एवं भविष्य के जीवन के लिए समझदारीपूर्ण निर्णय नही ले सकती है। मैंने नाबालिग को आरोपी के घर से दस्तयाब कर सुपुर्द करवाने अथवा सक्षम न्यायालय के समक्ष पेश करने के लिए एसपी से गुहार लगाई है। लेकिन पुलिस कार्यवाही नहीं कर रही है। रामेश्वर भाटी, थानाधिकारी सायला के अनुसार सायला पुलिस द्वारा आरोपी प्रवीण को गिरफ्तार किया जा चुका है। लेकिन नाबालिग को बिना न्यायालय आदेश के दस्तयाब नही कर सकते है। न्यायालय से निर्देश मिलने पर आगे की कार्यवाही करेंगे।

शिक्षा विभाग ने चाइल्ड केयर लीव (सी.सी.एल.) पर रोक लगाई

शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने आदेश निकालकर शिक्षिकाओं की उम्मीदों पर पानी फेरा

- **जिन शिक्षिकाओं ने पूर्व में सी.सी.एल. स्वीकृत करवा रखी है, उन्हें भी सी.सी.एल. निरस्त करवाकर स्कूलों में लौटने के आदेश जारी किये**

बीकानेर, (निसं)। यह पहला मौका है जब चाइल्ड केयर लीव (सी.सी.एल.) पर किसी तरह की रोक लगाई गई है। गौरतलब है कि इस समय कई शिक्षिकाओं के बच्चों की भी परीक्षाएं चल रही हैं और मौसम परिवर्तन के चलते बच्चे बीमार हो रहे हैं। ऐसे में शिक्षिकाओं को सी.सी.एल. की जरूरत पड़ती है, लेकिन शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने आदेश निकालकर शिक्षिकाओं की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। परीक्षाओं का सीजन चलने के कारण सरकारी स्कूलों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं तथा अन्य कार्मिकों के चाइल्ड केयर लीव (सी.सी.एल.) पर रोक लगा दी गई है। यह पहला मौका है जब चाइल्ड केयर लीव पर किसी तरह की रोक लगाई गई है।

इसके अलावा जिन शिक्षिकाओं ने पूर्व में सी.सी.एल. स्वीकृत करवा रखी है, उन्हें भी सी.सी.एल. निरस्त करवा कर स्कूलों में लौटने के आदेश दिए गए हैं। पूर्व में वसुंधरा राजे के मुख्यमंत्री रहने के दौरान महिला कर्मियों की परेशानी को देखते हुए बच्चे के 18 साल तक आयु पूरी नहीं होने तक दो साल का सी.सी.एल. लेने की स्वीकृति जारी की गई थी। विभाग के उच्च अधिकारियों ने वीसी के जरिये अधिकारियों को इस समय किसी की भी सी.सी.एल. स्वीकृत नहीं करने के निर्देश दिए हैं। कहा था कि अगर कोई शिक्षिका तथा अन्य महिला कार्मिक ने पूर्व में सी.सी.एल. स्वीकृत करवा रखी है, तो उनकी सी.सी.एल. को निरस्त कर स्कूल बुलाया जाए। महिला कार्मिकों का संकट यह है कि इनमें से कइयों के बच्चों की उम्र अगले सत्र तक 18 वर्ष पार हो जाएगी। ऐसे में उन्हें सी.सी.एल. का लाभ तकनीकी आधार पर नहीं मिल पाएगा। इस समय बोर्ड की परीक्षाएं चल रही हैं। यह परीक्षाएं 4 अप्रेल को समाप्त होंगी। इसके बाद स्कूलों में छोटी कक्षाओं की परीक्षाएं शुरू हो जाएंगी और 16 मई से ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाएगा। इसे देखते हुए अब आगामी शिक्षा सत्र में ही सी.सी.एल. स्वीकृत होने की उम्मीद है।

अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी निजी दौरे पर जैसलमेर आये

- **अमेरिका के राजदूत और उनका परिवार जैसलमेर की कला संस्कृति से रूबरू हुआ**

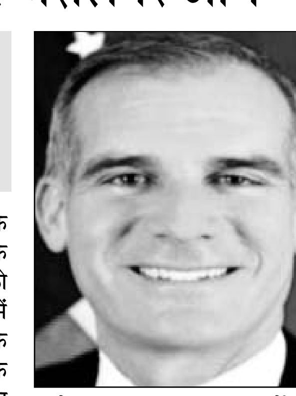

अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी

जैसलमेर, (नि.सं.)। अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी अपने परिवार के साथ दो दिवसीय दौरे पर शुक्रवार को दिल्ली से इंडिगो की फ्लाइट में जैसलमेर पहुंचे। एयरपोर्ट पहुंचने के बाद कड़ी सुरक्षा के बीच अमेरिका के राजदूत सम मार्ग पर स्थित होटल सूर्यागढ़ पहुंचे। होटल सूर्यागढ़ पहुंचने पर राजदूत और उनके परिवार का राजस्थानी परंपरा के साथ भव्य स्वागत किया गया।

अमेरिका के राजदूत और उनका परिवार जैसलमेर की कला संस्कृति से रूबरू हुए। एरिक ने परिवार सहित विभिन्न पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया। अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने जैसलमेर के रेगिस्तान में स्थित राजकुमारी रत्नावती गर्ल्स स्कूल का विजिट किया। इस दौरान जैसलमेर के पूर्व महारावल चैतन्यराजसिंह उनके साथ मौजूद रहे। उन्होंने एरिक गार्सेटी को स्कूल के बारे में विभिन्न जानकारी दी। जैसलमेर के थार रेगिस्तान के बीच बना यह राजकुमारी रत्नावती गर्ल्स स्कूल बेहद ही आकर्षण का केन्द्र है। इस स्कूल को न्यूयॉर्क के आर्किटेक्ट डायरला केलाग ने डिजाइन किया है। रविवार को वे परिवार के साथ दिल्ली लौट जाएंगे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा के जच्चा वार्ड की छत जर्जर

छत के नीचे प्रत्येक दिन करीब एक दर्जन जच्चा व बच्चा रात गुजारने के लिए मजबूर

अस्पताल के वार्ड में झड़ते प्लास्टर के नीचे प्रसुताएं बैठी हैं।

पावटा, (निसं)। उपखंड मुख्यालय स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा के जच्चा वार्ड की छत पूरी तरह जर्जर है। इस छत के नीचे प्रत्येक दिन करीब एक दर्जन जच्चा व बच्चा रात गुजारने के लिए मजबूर हैं। मात्र 1400 सौ रुपये की प्रोत्साहन राशि के लिए जान जोखिम में डाल कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा में प्रसव के लिए आती हैं। केन्द्र व राज्य सरकार ग्रामीण इलाके में स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने के लिए कटिबद्ध है। मगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा का जच्चा वार्ड देखने के बाद डर लगता है। यही नहीं चलते समय कब छत से प्लास्टर किसी प्रसव महिला व शिशु के बेड पर गिर जाएगा कहना मुश्किल है।

अस्पताल प्रबंधन जर्जर जच्चा वार्ड की मरम्मत कराना उचित नहीं समझते हैं। जबकि प्रत्येक माह इस अस्पताल में 50 से 100 महिलाए प्रसव के लिए आती हैं। जिससे गर्भवती महिलाओं को परेशानी उठाना पड़ती है। मरीजों के साथ आने वाले परिजनों को ठहरने के लिए समाजसेवियों ने जो भवन बनवाया गया था उसमें दवाइयों का स्टोर व कंप्यूटर काम के लिए उपयोग में लिया जा रहा है। इससे मरीजो के साथ आये परिजनों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस संबंध में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा प्रभारी डॉ. देवेंद्र शर्मा का कहना है कि जल्दी ही इसकी मरम्मत करवाई जायेगी। वही बीसीएमएचओ सुनील मीणा का कहना है कि सीएचसी की विजिट कर समस्या को देखा जायेगा।

आठवीं की छात्रा ने घरेलू ऑटोक्लेव मशीन बनाई

बीकानेर, (निसं)। जिले के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जैलवेल की कक्षा 8 की छात्रा तनीषा नायक ने जुगाड़ से ही घरेलू ऑटोक्लेव मशीन तैयार कर दी। इस प्रोजेक्ट का इंस्पायर अवार्ड में भी राज्य स्तर पर चयन किया गया है। तनीषा ने बताया कि एक बार पिता चोटिल हो गए थे, तो रोजाना ड्रेसिंग करवानी पड़ती थी। इसके लिए प्रतिदिन अस्पताल जाना महंगा भी पड़ता था। सोचा कि यह घर में क्यों नहीं किया जा सकता। खुले घाव पर ड्रेसिंग के लिए विसंक्रमित ड्रेसिंग सामान की आवश्यकता पड़ती है। यह ऑटोक्लेव मशीन से ही संभव है। जो घर पर सुलभ नहीं थी। उसने बताया कि शिक्षक दीपक जोशी के मार्गदर्शन में इस तरह की मशीन बनाने के बारे में सोचा और घर में पड़ी वस्तुओं के उपयोग से ही यह घरेलू ऑटोक्लेव मशीन तैयार कर दी। तनीषा ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को तैयार करने के लिए काफी अध्ययन और मेहनत की गई। मामूली लागत से तैयार हुई घरेलू ऑटोक्लेव मशीन से कम खर्च में ही ड्रेसिंग मटेरियल, अस्पताल में काम आने वाले आवश्यक उपकरण आदि को विसंक्रमित यानी कीटाणुरहित किया जा सकता है।

राशिफल रविवार 3 मार्च, 2024

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2080, अनुराधा नक्षत्र दिन 3:55 तक, हर्षण योग सांय 5:24 तक, बव करण प्रात: 8:45 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–मकर, बुध–कुम्भ, गुरू–मेष, शुक्र–मकर, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से प्रात: 8:45 तक है। आज कालाष्टमी, जानकी जयन्ती, श्रीनाथ जी पाटोत्सव नाथद्वारा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:19 से 9:46 तक, लाभ–अमृत 9:46 से 12:39 तक, शुभ 2:05 से 3:32 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:52, सूर्यास्त 6:25

मेष

नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

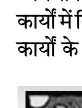

वृष

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

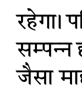

मिथुन

अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

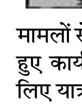

कर्क

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

सिंह

घर–परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। धन हानि हो सकती है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है।

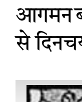

कन्या

आर्थिक मामलों में परिचितों से परामर्श मिल सकता है। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये–पुराने मित्रों से संपर्क बनेगा।

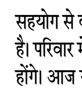

तुला

घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

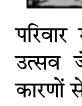

वृश्चिक

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास व आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

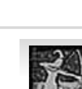

धनु

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। धन हानि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

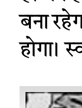

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

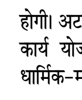

कुंभ

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

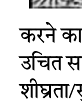

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।